International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2016; Page No. 34-36

'स्वामी' उपन्यास की नायिका सौदामिनी

डॉ. उत्तम पटेल

एम.ए., बी.एड्., एम.फिल्., पी-एच.डी., नेट यूजीसी, एसोसियेट प्रोफेसर एवम् अध्यक्ष, हिंदी विभाग, श्री वनराज आर्टस एण्ड कॉमर्स कॉलेज,धरमपुर, जिला- वलसाड, गुजरात, भारत ।

सारांश

मन्नू भंडारी हिंदी की आधुनिक कहानीकार और उपन्यासकार हैं। इन्होंने बंगाली कथाकार शरतचंद्र की कहानी स्वामी पर से हिंदी में 'स्वामी' उपन्यास की रचना की। जो एक प्रयोग ही है। शरतचंद्र तो बंगाली साहित्य में नारी-लेखक के रूप में प्रख्यात हैं। जिनकी कहानियाँ व उपन्यास आदर्शात्मक हैं। शरतचंद्र की 'स्वामी' एक आदर्शात्मक कहानी है। जिसकी नायिका सौदामिनी के लिए नरेन्द्र के प्रति का आकर्षण पति के बीच की खाई बन जाता है, जिसे उसकी सारी उदारता के बावजूद वह लाँघ नहीं पाती। जब कि मन्नू भंडारी की सौदामिनी आधुनिक युग की एक ऐसी नारी है जिसका मन पति और प्रेमी के बीच उलझ गया है किन्तु अंत में वह अपने पति का ही वरण करती है। ऐसे में मन्नू भंडारी की सौदामिनी भी आदर्शवादिनी बनी रहती है।

मूलशब्द: मिनी, घनश्याम, प्रेयसी, संघर्ष, स्वामी ।

प्रस्तावना

मन्नू भंडारी का 'स्वामी' उपन्यास शरतचंद की कहानी 'स्वामी' का हिन्दी रूपांतरण है। जिसमें मन्नू भंडारी ने शरतचंद कृत 'स्वामी' को अपने समय के अनुकूल ढालकर आवश्यक फेरबदल के साथ उपन्यास के रूप में प्रस्तुत किया है। " 'स्वामी' सुप्रसिद्ध कथाकार मन्नू भंडारी का भावप्रवण विचारोत्तेजक उपन्यास है। आत्मीय रिश्तों के बीच जिस सघन अंतर्द्वंद्व का चित्रण करने के लिए मन्नू भंडारी सुपरिचित है, उसका उत्कृष्ट रूप स्वामी में देखा जा सकता है। सौदामिनी, नरेन्द्र और घनश्याम के त्रिकोण में उपन्यास की कथा विकसित हुई है। सामाजिक और पारिवारिक परिस्थितियाँ तो हैं ही! कथा-रस के साथ उपन्यास में स्थान-स्थान पर ऐसे प्रश्न उठाए गए हैं जिनकी वर्तमान में प्रसंगिकता स्वयंसिद्ध है!"

'स्वामी' उपन्यास के प्रमुख पात्र हैं- सौदामिनी, नरेन्द्र और घनश्याम। मिनी इस उपन्यास की नायिका है, जिसे घर के सभी लोग मिनी कहते हैं। इसी मिनी के इर्द-गिर्द 'स्वामी' उपन्यास की सारी कहानी बुनी गई है।

मिनी पढी-लिखी लडकी है, जिसे अच्छी पुस्तकें पढने का गहरा शौक है। वह पितृहीन है। उसकी माँ उन्नीस साल की उम्र में ही विधवा हो गयी थी। तब से वे मणिबाबू, जो उसके मामा है, के यहाँ रहती है। मिनी तर्क कर सकती है। वह तो नरेन्द्र से भी कहती है- "क्या आप भी यही मानते हैं कि शादी के बाद औरत का प्रेम करने का अधिकार समाप्त हो जाता है? यह सौभाग्य केवल पुरूषों को ही प्राप्त है?" मिनी के तर्क की मणिबाबू भी प्रशंसा करते हैं। नरेन्द्र को भी कहना पडता है- "अरे वाह! मिनी तो पंडित हो गयी। पिछले साल तक तो गुडिया खेलती फिरती थी और आज ऐसा ज्ञान फूट रहा है।" मिनी उसके मामा मणिबाबू का सर्जन है। नरेन्द्र उसे अपने नास्तिक मामा की चेली कहता है। तथा मामा की इस चेली पर नरेन को भी असीम श्रद्धा व विश्वास है।

मिनी के बाल काले, घने और बेहद लंबे हैं, जिस पर उसकी माँ को बडा नाज़ है। अपनी माँ के प्रति मिनी को अपार स्नेह है। अपनी माँ की डाँट-फटकार मिनी को कभी बुरी नहीं लगती, पर माँ का मौन उसके लिए असह्य हो जाता है। माँ की डाँट-फटकार में भी उसे माँ के प्यार का आभास मिलता रहता है। माँ के ठाकुर जी को पालना सजाने के लिए वह सुंदर मालाएँ लाती है। क्योंकि मिनी के हाथ की गूँथी हुई माला माँ को विशेष रूप से प्रिय है। वह अपनी माँ जैसी ही है। वह इतनी चंचल है कि माँ का कहना तो मानती ही नहीं। वह मणिबाबू की भांजी ही नहीं, उसकी निकटतम मित्र भी है।

मिनी बुद्धिमती, सुंदर, भावुक व समझदार है। माँ के प्रति उसे असीम आस्था है। उसके अपने मामा को अपना सारा विश्वास सौंप दिया है। मिनी में जवानी का अल्हडपन है। वह बहुत मनमानी, जिद्दी, गुस्सैल और बात-बात पर तुनकने वाली है। वह हाजिरजवाबी भी है। माँ से अपनी शादी की बात सुनकर सहज भाव से कह देती है- "माँ, मैं बुआ के बताये और तुम्हारे पसंद किये नितांई-निमायी से तो शादी करने से रही। क्यों बेकार बहस कर रही हो?" वह अपनी माँ को बहुत क्रोधित करती है। समझदार होकर भी वह कभी-कभी बच्चों जैसा व्यवहार कर देती है। नरेन्द्र जब उससे मजाक में कहता है- "ओह, फूल चुराने आयी थी? तब वह गुस्से में फूल चारों ओर फेंक देती है।

मिनी नरेन के हृदय की अधिष्ठात्री देवी है। वह उसकी प्रेयसी है। वह जानती है कि नरेन उसकी कामना करता है, वह उसकी काम्य है। नरेन के लिए उसके हृदय में असीम भावना एवम् प्रेम है। नरेन तो उसका अपना है। नरेन को देखकर तो उसकी घनी-लंबी पलकें झुक जाती हैं। उसके दिल की धड़कन बढ़ती जाती है। नरेन द्वारा उसके अधर पर किये गये चुम्बन को वह भूल नहीं पाती। उस समय तो लज्जा, संकोच, पुलकन - जाने कितनी भावनाएँ उसे एक साथ मथने लगती हैं। नरेन का प्रेम-चुम्बन, स्पर्श मिनी के हृदय में हिलोरें पैदा कर देता है। वह बाहर से शांत है और भीतर से उमड़ती है। नरेन के स्नेह से तो भीतर तक सराबोर हो जाती है। इसलिए तो वह माँ से मन ही मन कहती है - "कहाँ-कहाँ पोंछोगी माँ, मैं तो आज भीतर तक गीली हुई हूँ... एकदम सराबोर! " नरेन के प्रति प्रेम के कारण ही तो उसके मन में संघर्ष पैदा होता है और वह सोचती है- नहीं, नहीं, वह किसीकी भी पत्नी बनकर नहीं रह सकेगी, नहीं रहेगी।

मिनी बहुत ही भावुक है। मामा की मृत्यु मानो उसके होश को ही छीन लेती है। उसके बारे में गिरि, मिनी की बुआ को ठीक ही कहती है- "तुम नहीं समझोगी दीदी, मामा में ही तो उसके प्राण बसते थे, उसके बिना वह जी कैसे रही है, मुझे तो यही सोच है।" मामा की मृत्यु को तो वह जैसे-तैसे सह लेती है किन्तु नरेन का विरह उसके लिए दुःसह बन जाता है। वह सहनशीलता की प्रतिमूर्ति बनकर सह लेती है। भावुक होने के कारण ही शादी के अंतिम समय तक वह नरेन की प्रतीक्षा करती है। वह भावुकता में बहती भी है। इसलिए वह सोचती है कि जीवन में कभी-कभी कुछ ऐसे क्षण आ सकते हैं, आ जाते हैं जब आदमी सोच-विचार, तर्क-कुतर्क से परे हो जाता है-अपनी भावनाओं के आगे बहुत-बहुत मज़बूर, बहुत-बहुत विवश हो जाता है। किन्तु वह सिर्फ़ भावना के स्तर पर ही नहीं जीती, यथार्थ के स्तर पर भी जीती है। क्योंकि वह जानती है कि मनुष्य को कभी-कभी भावनाओं में बहना अच्छा लगता है। परंतु इनको सच बनाने के लिए रास्ते में बहुत-सी बाधाएँ भी आ जाती हैं। यहाँ मिनी का यथार्थ के धरातल पर खड़े रहकर सोचना स्पष्ट परिलक्षित होता है।

मिनी कभी झूठ भी बोल लेती है तो कभी समय आने पर बिना सोचे-समझे नरेन के साथ भाग निकलती है।

मिनी का विवाहित जीवन अंतर्द्वंद्व से भर जाता है। वह एक ओर नरेन की ओर खींचती जाती है तो दूसरी ओर घनश्याम की ओर। वह मन की उलझनों में निरंतर उलझती चली जाती है। नारी सहज दुर्बलताओं के कारण घनश्याम के प्रति उसे स्नेह भी है तो आशंका भी। नरेन, जो उसकी ससुराल में आता है, उसके भाग जाने का प्रस्ताव वह ठुकरा देती है किन्तु वही नरेन जब फिर आता है तब घनश्याम के प्रति की आशंका के कारण, अविश्वास के कारण तथा पारिवारिक कलह और अपमान ने उसके आत्म-सम्मान को जो आहत किया है, उसके परिणाम स्वरूप नरेन के साथ जाने के लिए वह घर को छोड देती है। किन्तु स्वतंत्र निर्णय लेने की अपनी क्षमता तथा मामा का यह कथन- "तू नरेन्द्र... वह तुझे प्यार कर सकता है पर निभा घनश्याम ही सकेगा।" के कारण वह नरेन के साथ जाने के लिए भी अपने को तैयार नहीं कर पाती और वह नरेन के बदले माँ के घर चली जाती है।

सौदामिनी अन्याय को सह नहीं पाती। अपने पति के प्रति घरवालों का घोर अन्याय सह न पाने के कारण वह सास के साथ भी संघर्ष थान लेती है। घनश्याम को भी मुँह पर सुना देती है। उसमें दृढता भी है। मिनी अंतर्द्वंद्व में फँसा हुआ चरित्र है। वह निरंतर तनाव भरी स्थिति में रहती है। घनश्याम की उदारता वह सह नहीं पाती। उसकी क्षमाशीलता उसे सज़ा के समान लगती है। अपने अपराध को वह उस पर भी थोप देती है।

मिनी संयमी है। घनश्याम उसका पति है। घनश्याम के प्रति उसका पहला भाव प्रतिरोध और विद्रोह का है, जो बाद में विरक्ति और उदासीनता से होता हुआ सहानुभूति, समझ, स्नेह, सम्मान की सीढियों को लाँघता हुआ श्रद्धा और आस्था तक पहुँचता है। घनश्याम के प्रति उसे जो अविश्वास है, वही विश्वास में परिणत हो जाता है। उसके प्रति उसे जो क्रोध है, जलन है, वही स्नेह और शीतलता में परिवर्तित हो जाता है। इसीलिए तो घर से भागने पर भी सोचती है कि घनश्याम उसे क्षमा कर देंगे। नरेन्द्र से वह कहती है- "ठीक ही कहते हो, राम नहीं कर पाये थे, पर ये कर देंगे। उदारता, क्षमा ये सब मेरे लिए केवल किताबी शब्द थे। इनका अर्थ तो मैंने इनके संपर्क में आकर ही जाना-समझा।" - इसमें मिनी का घनश्याम के प्रति का असीम विश्वास व श्रद्धा झलकते हैं।

शरतचंद्र की सौदामिनी "नरेन्द्र के प्रति किसी समय आकर्षित थी। यह प्रथम आकर्षण उसके तथा उसके पति के बीच की खाई बन गया था, जिसे उसकी सारी उदारता के बावजूद वह लाँघ नहीं पाती।" वहाँ मन्नू भंडारी की सौदामिनी के मन में माँ की ठाकुर के प्रति की आस्था और निष्ठा एक प्रकाश-किरण आलोकित कर देती है, जिसके परिणाम स्वरूप मिनी की यह यात्रा अविश्वास से विश्वास, अनास्था से आस्था और नास्तिकता से आस्तिकता की प्रक्रिया बन जाती है। और मिनी नरेन को त्याग कर वापस माँ के यहाँ चली जाती है जहाँ घनश्याम उसे लेने आता है। यही कारण है कि यह एक सहज मानवीय अंतर्द्वंद्व तथा "पति और प्रेमी के बीच उलझे नारी मन की भावप्रवण कथा है।" इस उपन्यास के बारे में एक इन्टरव्यू में मन्नू भंडारी ने कहा था-"कथाकार शरतचंद्र ने अपनी एक छोटी-सी रचना 'स्वामी' में सौदामिनी की हृदयस्पर्शी कहानी लिखी थी। मैंने उसको लघु उपन्यास का रूप देकर भारतीय साहित्य में एक नया प्रयोग किया। शरत्चंद्र ने अपनी कहानी में प्रेमी को विलन बना दिया था। लेकिन आज परिस्थिति विकट बन गयी है। सौदामिनी में आद्यंत आत्म-भर्त्सना और आत्म-धिक्कार का भाव भरा हुआ था। शरत् की सौदामिनी को पूर्व प्रेमी नरेन्द्र कलकत्ते ले जाकर

कमरे में बंद कर देता है और प्रेमी को आगे भाई बना देनेवाली घटना आती है जो हास्यास्पद लगती है। इसलिए मैंने कहानी का अंतिम हिस्सा एकदम बदल दिया। उसके चरित्र में मैंने नया जोश, नये विचार भरे। यह आत्म-धिक्कार और पाप-बोध की कहानी थी, मैंने उसे सहज मानवीय अंतर्द्वन्द्व का रूप दे दिया।"

निष्कर्ष- संक्षेप में कह सकते हैं कि सौदामिनी इस उपन्यास की नायिका है, जो निरंतर उलझनों में फँसी रहती है। वह बहुत ही अल्हड, भावुक, सहनशील, त्यागी, स्नेही, संयमी, अन्याय से लडनेवाली नारी के रूप में तथा स्वतंत्र निर्णय लेनेवाली नायिका के रूप में हमारे सामने आती है। किन्तु अंत में इसका आदर्शवादी रूप हमारे सामने आता है। जिसके मूल में उसका पति घनश्याम है, जो उसका स्वामी है। मिनी के लिए "'स्वामी' शब्द सिर्फ पति के लिए पारस्परिक संबोधन मात्र न रहकर, उच्चतर मनुष्यता का विश्लेषण बन जाता है।"

संदर्भ

1. भंडारी, मन्नू (2013), स्वामी उपन्यास के रैपर से, नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन
2. भंडारी, मन्नू (1985), स्वामी,पृ.5, नई दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस
3. वही.पृ.5
4. वही.पृ.8
5. वही.पृ.17
6. वही.पृ.25
7. वही.पृ.38
8. वही.पृ.37
9. वही.पृ.109
10. चतुर्वेदी, रामस्वरूप (1993), शरत् के नारी पात्र,पृ.258, नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ
11. भंडारी, मन्नू (2013), स्वामी उपन्यास के रैपर से, नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन
12. http://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603 /59310/11/11_appendix%201.pdf
13. भंडारी, मन्नू (2013), स्वामी उपन्यास के रैपर से, नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन